إِلَيَّ أَنَّمَآ إِلَٰهُكُمْ إِلَٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ فَهَلْ أَنتُم مُّسْلِمُونَ ﴿١٠٨﴾ فَإِن تَوَلَّوْا فَقُلْ

होती है कि तुम्हारा ख़ुदा नहीं मगर एक अल्लाह तो क्या तुम मुसल्मान होते हो फिर अगर वोह मुंह फेरें[190] तो फ़रमा दो

ءَاذَنتُكُمْ عَلَىٰ سَوَآءٍ ۖ وَإِنْ أَدْرِيٓ أَقَرِيبٌ أَم بَعِيدٌ مَّا تُوعَدُونَ ﴿١٠٩﴾

मैं ने तुम्हें लड़ाई का ए'लान कर दिया बराबरी पर और मैं क्या जानूं[191] कि पास है या दूर है वोह जो तुम्हें वा'दा दिया जाता है[192]

إِنَّهُۥ يَعْلَمُ ٱلْجَهْرَ مِنَ ٱلْقَوْلِ وَيَعْلَمُ مَا تَكْتُمُونَ ﴿١١٠﴾ وَإِنْ أَدْرِي

बेशक अल्लाह जानता है आवाज़ की बात[193] और जानता है जो तुम छुपाते हो[194] और मैं क्या जानूं

لَعَلَّهُۥ فِتْنَةٌ لَّكُمْ وَمَتَٰعٌ إِلَىٰ حِينٍ ﴿١١١﴾ قُلَ رَبِّ ٱحْكُم بِٱلْحَقِّ ۗ وَ

शायद वोह[195] तुम्हारी जांच हो[196] और एक वक़्त तक बरत्वाना[197] नबी ने अ़र्ज़ की कि ऐ मेरे रब ह़क़ फ़ैसला फ़रमा दे[198] और

رَبُّنَا ٱلرَّحْمَٰنُ ٱلْمُسْتَعَانُ عَلَىٰ مَا تَصِفُونَ ﴿١١٢﴾ ع

النصف

हमारे रब रह़मान ही की मदद दरकार है उन बातों पर जो तुम बताते हो[199]

ايَاتُهَا ٧٨ | ٢٢ سُورَةُ الْحَجِّ مَدَنِيَّةٌ ١٠٣ | رُكُوعَاتُهَا ١٠

सूरए ह़ज्ज मदनिय्या है इस में अठत्तर आयतें और दस रुकूअ़ हैं

بِسْمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحْمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेह्रबान रह़्म वाला[1]

हैं कि आप की बदौलत ताख़ीरे अ़ज़ाब हुई और ख़सफ़ व मस्ख़ और इस्तीसाल के अ़ज़ाब उठा दिये गए। तफ़्सीरे रूहुल बयान में इस आयत की तफ़्सीर में अकाबिर का येह क़ौल नक़्ल किया है कि आयत के मा'ना येह हैं कि हम ने आप को नहीं भेजा मगर रह़मते मुत़्लक़ा, ताम्मा, कामिला, आ़म्मा, शामिला, जामिआ़, मुह़ीत़ा ब जमीअ़ मुक़य्यदात, रह़मते ग़ैबिया व शहादते इ़ल्मिय्या व ऐ़निया व वुजूदिया व शुहूदिया व साबिक़ा व लाहि़क़ा وغیرذالک तमाम जहानों के लिये आ़लमे अरवाह़ हों या आ़लमे अज्साम ज़विल उ़क़ूल हों या ग़ैर ज़विल उ़क़ूल और जो तमाम आ़लमों के लिये रह़मत हो लाज़िम है कि वोह तमाम जहान से अफ़्ज़ल हो। **190 :** और इस्लाम न लाएं **191 :** बे ख़ुदा के बताए। या'नी येह बात अ़क़्ल व क़ियास से जानने की नहीं है। यहां दिरायत की नफ़ी फ़रमाई गई "दिरायत" कहते हैं अन्दाज़े और क़ियास से जानने को जैसा कि मुफ़रदाते राग़िब और रद्दुल मुह़तार में है, इसी लिये अल्लाह तआ़ला के वासित़े लफ़्ज़ "दिरायत" इस्ति'माल नहीं किया जाता और क़ुरआने करीम के इत़्लाक़ात इस पर दलालत करते हैं जैसा कि फ़रमाया مَا كُنْتَ تَدْرِيْ مَا الْكِتٰبُ وَلَا الْاِيْمَانُ लिहाज़ा यहां बे ता'लीमे इलाही मह़ज़ अपने अ़क़्ल व क़ियास से जानने की नफ़ी है न कि मुत़्लक़ इ़ल्म की और मुत़्लक़ इ़ल्म की नफ़ी कैसे हो सकती है जब कि इसी रुकूअ़ के अव्वल में आ चुका है وَاقْتَرَبَ الْوَعْدُ الْحَقُّ या'नी क़रीब आया सच्चा वा'दा, तो कैसे कहा जा सकता है कि वा'दे का क़ुर्ब व बो'द किसी त़रह़ मा'लूम नहीं, ख़ुलासा येह है कि अपने अ़क़्लो क़ियास से जानने की नफ़ी है न कि ता'लीमे इलाही से जानने की। **192 :** अ़ज़ाब का या क़ियामत का। **193 :** जो ऐ कुफ़्फ़ार तुम ए'लान के साथ इस्लाम पर ब त़रीक़े त़ा'न कहते हो **194 :** अपने दिलों में या'नी नबी की अ़दावत और मुसल्मानों से ह़सद जो तुम्हारे दिलों में पोशीदा है अल्लाह उस को भी जानता है सब का बदला देगा। **195 :** या'नी दुन्या में अ़ज़ाब को मुअख़्ख़र करना **196 :** जिस से तुम्हारा ह़ाल ज़ाहिर हो जाए। **197 :** या'नी वक़्ते मौत तक। **198 :** मेरे और उन के दरमियान जो मुझे झुटलाते हैं, इस त़रह़ कि मेरी मदद कर और उन पर अ़ज़ाब नाज़िल फ़रमा। येह दुआ़ मुस्तजाब हुई और कुफ़्फ़ार बद्र व अह़ज़ाब व ह़ुनैन वग़ैरा में मुब्तलाए अ़ज़ाब हुए। **199 :** शिर्क व कुफ़्र और बे ईमानी की। **1 :** सूरए ह़ज्ज बक़ौले इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا व मुजाहिद मक्किय्या है सिवाए छ[6] आयतों के जो هٰذٰنِ خَصْمٰنِ से शुरूअ़ होती हैं, इस सूरत में दस रुकूअ़ और अठत्तर आयतें और एक हज़ार दो सो इकानवे कलिमात

www.dawateislami.net

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمْ ۚ اِنَّ زَلْزَلَةَ السَّاعَةِ شَيْءٌ عَظِيْمٌ ۝١ يَوْمَ

ऐ लोगो ! अपने रब से डरो[2] बेशक क़ियामत का ज़ल्ज़ला[3] बड़ी सख़्त चीज़ है जिस दिन

تَرَوْنَهَا تَذْهَلُ كُلُّ مُرْضِعَةٍ عَمَّاۤ اَرْضَعَتْ وَتَضَعُ كُلُّ ذَاتِ حَمْلٍ

तुम उसे देखोगे हर दूध पिलाने वाली[4] अपने दूध पीते को भूल जाएगी और हर गाभनी[5] अपना गाभ डाल

حَمْلَهَا وَتَرَى النَّاسَ سُكٰرٰى وَمَا هُمْ بِسُكٰرٰى وَلٰكِنَّ عَذَابَ اللّٰهِ

देगी[6] और तू लोगों को देखेगा जैसे नशे में हैं और वोह नशे में न होंगे[7] मगर है येह कि अल्लाह की मार

شَدِيْدٌ ۝٢ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُّجَادِلُ فِى اللّٰهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّيَتَّبِعُ كُلَّ

कड़ी है और कुछ लोग वोह हैं कि अल्लाह के मुआमले में झगड़ते हैं बे जाने बूझे और हर सरकश शैतान

شَيْطٰنٍ مَّرِيْدٍ ۙ۝٣ كُتِبَ عَلَيْهِ اَنَّهٗ مَنْ تَوَلَّاهُ فَاَنَّهٗ يُضِلُّهٗ وَيَهْدِيْهِ

के पीछे हो लेते हैं[8] जिस पर लिख दिया गया है कि जो इस की दोस्ती करेगा तो येह ज़रूर उसे गुमराह कर देगा और उसे

اِلٰى عَذَابِ السَّعِيْرِ ۝٤ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اِنْ كُنْتُمْ فِىْ رَيْبٍ مِّنَ الْبَعْثِ

अ़ज़ाबे दोज़ख़ की राह बताएगा[9] ऐ लोगो ! अगर तुम्हें क़ियामत के दिन जीने में कुछ शक हो तो येह ग़ौर करो

فَاِنَّا خَلَقْنٰكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ عَلَقَةٍ ثُمَّ مِنْ مُّضْغَةٍ

कि हम ने तुम्हें पैदा किया मिट्टी से[10] फिर पानी की बूंद से[11] फिर ख़ून की फटक से[12] फिर गोश्त की बोटी से

مُّخَلَّقَةٍ وَّغَيْرِ مُخَلَّقَةٍ لِّنُبَيِّنَ لَكُمْ ؕ وَنُقِرُّ فِى الْاَرْحَامِ مَا نَشَآءُ

नक़्शा बनी और बे बनी[13] ताकि हम तुम्हारे लिये अपनी निशानियां ज़ाहिर फ़रमाएं[14] और हम ठहराए रखते हैं माओं के पेट में जिसे चाहें

और पांच हज़ार पछत्तर हर्फ़ हैं। **2 :** उस के अ़ज़ाब का ख़ौफ़ करो और उस की ताअ़त में मश्ग़ूल हो। **3 :** जो अ़लामाते क़ियामत में से है और क़रीबे क़ियामत आफ़्ताब के मग़रिब से तुलूअ़ होने के नज़्दीक वाक़ेअ़ होगा **4 :** उस की हैबत से **5 :** या'नी ह़म्ल वाली उस दिन के होल से **6 :** ह़म्ल साक़ित़ हो जाएंगे। **7 :** बल्कि अ़ज़ाबे इलाही के ख़ौफ़ से लोगों के होश जाते रहेंगे। **8 शाने नुज़ूल :** येह आयत नज़्र बिन ह़ारिस के बारे में नाज़िल हुई जो बड़ा ही झगड़ालू था और फ़िरिश्तों को ख़ुदा की बेटियां और क़ुरआन को पहलों के क़िस्से बताता था और मौत के बा'द उठाए जाने का मुन्किर था। **9 :** शैत़ान के इत्तिबाअ़ से ज़ज्र फ़रमाने के बा'द मुन्किरीने बअ़्स पर हुज्जत क़ाइम फ़रमाई जाती है। **10 :** तुम्हारी नस्ल की अस्ल या'नी तुम्हारे जद्दे आ'ला ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام को इस से पैदा कर के। **11 :** या'नी क़त़रए मनी से उन की तमाम जुर्रिय्यत को। **12 :** कि नुत़्फ़ा ख़ून ग़लीज़ हो जाता है। **13 :** या'नी मुसव्वर और ग़ैर मुसव्वर, बुख़ारी और मुस्लिम की ह़दीस में है : सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया तुम लोगों का माद्दए पैदाइश मां के शिकम में चालीस रोज़ तक नुत़्फ़ा रहता है, फिर इतनी ही मुद्दत ख़ून बस्ता (जमा हुवा ख़ून) हो जाता है, फिर इतनी ही मुद्दत गोश्त की बोटी की त़रह़ रहता है, फिर अल्लाह तआ़ला फ़िरिश्ता भेजता है जो उस का रिज़्क़ उस की उ़म्र उस के अ़मल उस का शक़ी या सईद होना लिखता है, फिर उस में रूह़ फूंकता है (الحدیث) अल्लाह तआ़ला इन्सान की पैदाइश इस त़रह़ फ़रमाता है और उस को एक ह़ाल से दूसरे ह़ाल की त़रफ़ मुन्तक़िल करता है, येह इस लिये बयान फ़रमाया गया **14 :** और तुम अल्लाह तआ़ला के कमाले क़ुदरत व ह़िक्मत को जानो

www.dawateislami.net

اِلٰۤى اَجَلٍ مُّسَمًّى ثُمَّ نُخْرِجُكُمْ طِفْلًا ثُمَّ لِتَبْلُغُوْۤا اَشُدَّكُمْ ۚ وَ مِنْكُمْ

एक मुक़र्रर मीआ़द तक[15] फिर तुम्हें निकालते हैं बच्चा फिर[16] इस लिये कि तुम अपनी जवानी को पहुंचो[17] और तुम में

مَّنْ يُّتَوَفّٰى وَ مِنْكُمْ مَّنْ يُّرَدُّ اِلٰۤى اَرْذَلِ الْعُمُرِ لِكَيْلَا يَعْلَمَ مِنْۢ بَعْدِ

कोई पहले ही मर जाता है और कोई सब में निकम्मी उ़म्र तक डाला जाता है[18] कि जानने के बा'द

عِلْمٍ شَيْـًٔا ؕ وَ تَرَى الْاَرْضَ هَامِدَةً فَاِذَاۤ اَنْزَلْنَا عَلَيْهَا الْمَآءَ اهْتَزَّتْ

कुछ न जाने[19] और तू ज़मीन को देखे मुरझाई हुई[20] फिर जब हम ने उस पर पानी उतारा तरो ताज़ा हुई

وَ رَبَتْ وَ اَنْۢبَتَتْ مِنْ كُلِّ زَوْجٍۭ بَهِيْجٍ ۝۵ ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ وَ

और उभर आई और हर रौनक़ दार जोड़ा[21] उगा लाई[22] येह इस लिये है कि अल्लाह ही ह़क़ है[23] और

اَنَّهٗ يُحْيِ الْمَوْتٰى وَ اَنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝۶ۙ وَّ اَنَّ السَّاعَةَ اٰتِيَةٌ لَّا

येह कि वोह मुर्दे जिलाए (ज़िन्दा करे)गा और येह कि वोह सब कुछ कर सकता है और इस लिये कि क़ियामत आने वाली इस में

رَيْبَ فِيْهَا ۙ وَ اَنَّ اللّٰهَ يَبْعَثُ مَنْ فِي الْقُبُوْرِ ۝۷ وَ مِنَ النَّاسِ مَنْ

कुछ शक नहीं और येह कि अल्लाह उठाएगा उन्हें जो क़ब्रों में हैं और कोई आदमी वोह है कि

يُّجَادِلُ فِي اللّٰهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّ لَا هُدًى وَّ لَا كِتٰبٍ مُّنِيْرٍ ۝۸ۙ ثَانِيَ عِطْفِهٖ

अल्लाह के बारे में यूं झगड़ता है कि न तो इ़ल्म न कोई दलील और न कोई रोशन नविश्ता (तह़रीर)[24] ह़क़ से अपनी गरदन मोड़े हुए

لِيُضِلَّ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ لَهٗ فِي الدُّنْيَا خِزْيٌ وَّ نُذِيْقُهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ

ताकि अल्लाह की राह से बहका दे[25] उस के लिये दुन्या में रुस्वाई है[26] और क़ियामत के दिन हम उसे आग का

और अपनी इब्तिदाए पैदाइश के ह़ालात पर नज़र कर के समझ लो कि जो क़ादिरे बरह़क़ बेजान मिट्टी में इतने इन्क़िलाब कर के जानदार आदमी बना देता है वोह मरे हुए इन्सान को ज़िन्दा करे तो उस की क़ुदरत से क्या बईद। **15 :** या'नी वक़्ते विलादत तक। **16 :** तुम्हें उ़म्र देते हैं **17 :** और तुम्हारी अ़क़्ल व क़ुव्वत कामिल हो। **18 :** और उस को इतना बुढ़ापा आ जाता है कि अ़क़्लो ह़वास बजा नहीं रहते और ऐसा हो जाता है **19 :** और जो जानता हो वोह भूल जाए। इ़क्रिमा ने कहा : जो क़ुरआन की मुदावमत रखेगा इस ह़ालत को न पहुंचेगा। इस के बा'द अल्लाह तआ़ला बअ़्स या'नी मरने के बा'द उठने पर दूसरी दलील बयान फ़रमाता है। **20 :** ख़ुश्क बे गियाह। **21 :** या'नी हर क़िस्म का ख़ुशनुमा सब्ज़ा **22 :** येह दलीलें बयान फ़रमाने के बा'द नतीजा मुरत्तब फ़रमाया जाता है। **23 :** और येह जो कुछ ज़िक्र किया गया आदमी की पैदाइश और ख़ुश्क बे गियाह ज़मीन को सर सब्ज़ो शादाब कर देना उस के वुजूद व ह़िक्मत की दलीलें हैं इन से उस का वुजूद भी साबित होता है। **24 शाने नुज़ूल :** येह आयत अबू जह्ल वग़ैरा एक जमाअ़ते कुफ़्फ़ार के ह़क़ में नाज़िल हुई जो अल्लाह तआ़ला की सिफ़ात में झगड़ा करते थे और उस की त़रफ़ ऐसे औसाफ़ की निस्बत करते थे जो उस की शान के लाइ़क़ नहीं। इस आयत में बताया गया कि आदमी को कोई बात बिग़ैर इ़ल्म और बे सनद व दलील के कहनी न चाहिये ख़ास कर शाने इलाही में और जो बात इ़ल्म वाले के ख़िलाफ़ बे इ़ल्मी से कही जाएगी वोह बात़िल होगी, फिर इस पर येह अन्दाज़ कि इसरार करे और बराहे तकब्बुर **25 :** और उस के दीन से मुन्ह़रिफ़ कर दे **26 :** चुनान्चे बद्र में वोह ज़िल्लतो ख़्वारी के साथ क़त्ल हुवा।

www.dawateislami.net

عَذَابَ الْحَرِيْقِ ﴿٩﴾ ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ يَدٰكَ وَاَنَّ اللّٰهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ

अ़ज़ाब चखाएंगे[27] येह उस का बदला है जो तेरे हाथों ने आगे भेजा[28] और अल्लाह बन्दों पर ज़ुल्म

لِّلْعَبِيْدِ ﴿١٠﴾ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّعْبُدُ اللّٰهَ عَلٰى حَرْفٍ ۚ فَاِنْ اَصَابَهٗ ع ١ ٨

नहीं करता[29] और कुछ आदमी अल्लाह की बन्दगी एक किनारे पर करते हैं[30] फिर अगर उन्हें कोई भलाई बन गई

خَيْرُ ِۨاطْمَاَنَّ بِهٖ ۚ وَاِنْ اَصَابَتْهُ فِتْنَةُ ِۨانْقَلَبَ عَلٰى وَجْهِهٖ ۚ قف خَسِرَ الدُّنْيَا

जब तो चैन से हैं और जब कोई जांच आ पड़ी[31] मुंह के बल पलट गए[32] दुन्या और आख़िरत

وَالْاٰخِرَةَ ۭ ذٰلِكَ هُوَ الْخُسْرَانُ الْمُبِيْنُ ﴿١١﴾ يَدْعُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا

दोनों का घाटा[33] येही है सरीह़ नुक़्सान[34] अल्लाह के सिवा ऐसे को पूजते हैं जो

لَا يَضُرُّهٗ وَمَا لَا يَنْفَعُهٗ ۭ ذٰلِكَ هُوَ الضَّلٰلُ الْبَعِيْدُ ﴿١٢﴾ ج يَدْعُوْا لَمَنْ

उन का बुरा भला कुछ न करे[35] येही है दूर की गुमराही ऐसे को पूजते हैं जिस

ضَرُّهٗٓ اَقْرَبُ مِنْ نَّفْعِهٖ ۭ لَبِئْسَ الْمَوْلٰى وَلَبِئْسَ الْعَشِيْرُ ﴿١٣﴾ اِنَّ اللّٰهَ

के नफ़्अ़ से[36] नुक़्सान की तवक़्क़ोअ़ ज़ियादा है[37] बेशक[38] क्या ही बुरा मौला और बेशक क्या ही बुरा रफ़ीक़ बेशक अल्लाह

يُدْخِلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا

दाख़िल करेगा उन्हें जो ईमान लाए और भले काम किये बाग़ों में जिन के नीचे

الْاَنْهٰرُ ۭ اِنَّ اللّٰهَ يَفْعَلُ مَا يُرِيْدُ ﴿١٤﴾ مَنْ كَانَ يَظُنُّ اَنْ لَّنْ يَّنْصُرَهُ اللّٰهُ

नहरें रवां बेशक अल्लाह करता है जो चाहे[39] जो येह ख़याल करता हो कि अल्लाह अपने नबी[40] की मदद न

27 : और उस से कहा जाएगा 28 : या'नी जो तू ने दुन्या में किया कुफ़्रो तक्ज़ीब। 29 : और किसी को बे जुर्म नहीं पकड़ता। 30 : इस में इत्मीनान से दाख़िल नहीं होते और उन्हें सबात व क़रार ह़ासिल नहीं होता शक व तरद्दुद में रहते हैं जिस त़रह़ पहाड़ के किनारे खड़ा हुवा शख़्स तज़ल्ज़ुल की ह़ालत में होता है। **शाने नुज़ूल :** येह आयत आ'राबियों की एक जमाअ़त के ह़क़ में नाज़िल हुई जो अत़राफ़ से आ कर मदीने में दाख़िल होते और इस्लाम लाते थे, उन की ह़ालत येह थी कि अगर वोह ख़ूब तन्दुरुस्त रहे और उन की दौलत बढ़ी और उन के बेटा हुवा तब तो कहते थे इस्लाम अच्छा दीन है इस में आ कर हमें फ़ाएदा हुवा और अगर कोई बात अपनी उम्मीद के ख़िलाफ़ पेश आई मसलन बीमार हो गए या लड़की हो गई या माल की कमी हुई तो कहते थे जब से हम इस दीन में दाख़िल हुए हैं हमें नुक़्सान ही हुवा और दीन से फिर जाते थे। येह आयत उन के ह़क़ में नाज़िल हुई और बताया गया कि उन्हें अभी दीन में सबात ही ह़ासिल नहीं हुवा, उन का ह़ाल येह है 31 : किसी क़िस्म की सख़्ती पेश आई 32 : मुरतद हो गए और कुफ़्र की त़रफ़ लौट गए। 33 : दुन्या का घाटा तो येह कि जो उन की उम्मीदें थीं वोह पूरी न हुईं और इरतिदाद की वज्ह से उन का ख़ून मुबाह़ हुवा और आख़िरत का घाटा हमेशा का अ़ज़ाब। 34 : वोह लोग मुरतद होने के बा'द बुत परस्ती करते हैं और 35 : क्यूं कि वोह बेजान है। 36 : या'नी जिस की परस्तिश के ख़याली नफ़्अ़ से उस को पूजने के 37 : या'नी अ़ज़ाबे दुन्या व आख़िरत की। 38 : वोह बुत 39 : फ़रमां बरदारों पर इन्आ़म और ना फ़रमानों पर अ़ज़ाब। 40 : ह़ज़रते मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم।

www.dawateislami.net

فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ فَلْيَمْدُدْ بِسَبَبٍ اِلَى السَّمَآءِ ثُمَّ لْيَقْطَعْ فَلْيَنْظُرْ

फ़रमाएगा दुन्या[41] और आख़िरत में[42] तो उसे चाहिये कि ऊपर को एक रस्सी ताने फिर अपने आप को फांसी दे ले फिर देखे

هَلْ يُذْهِبَنَّ كَيْدُهٗ مَا يَغِيْظُ ﴿١٥﴾ وَكَذٰلِكَ اَنْزَلْنٰهُ اٰيٰتٍۭ بَيِّنٰتٍ ۙ وَّاَنَّ

कि उस का येह दाउं कुछ ले गया उस बात को जिस की उसे जलन है[43] और बात येही है कि हम ने येह क़ुरआन उतारा रोशन आयतें और येह कि

اللّٰهَ يَهْدِيْ مَنْ يُّرِيْدُ ﴿١٦﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَالَّذِيْنَ هَادُوْا وَالصّٰبِـُٔوْنَ

अल्लाह राह देता है जिसे चाहे बेशक मुसल्मान और यहूदी और सितारा परस्त

وَالنَّصٰرٰى وَالْمَجُوْسَ وَالَّذِيْنَ اَشْرَكُوْٓا ۖ اِنَّ اللّٰهَ يَفْصِلُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ

और नसरानी और आतश परस्त और मुश्रिक बेशक अल्लाह इन सब में क़ियामत के दिन

الْقِيٰمَةِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ﴿١٧﴾ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يَسْجُدُ لَهٗ

फ़ैसला करेगा[44] बेशक हर चीज़ अल्लाह के सामने है क्या तुम ने न देखा[45] कि अल्लाह के लिये सज्दा करते हैं

مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِي الْاَرْضِ وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ وَالنُّجُوْمُ وَ

वोह जो आस्मानों और ज़मीन में हैं और सूरज और चांद और तारे और

الْجِبَالُ وَالشَّجَرُ وَالدَّوَاۗبُّ وَكَثِيْرٌ مِّنَ النَّاسِ ۭ وَكَثِيْرٌ حَقَّ عَلَيْهِ

पहाड़ और दरख़्त और चौपाए[46] और बहुत आदमी[47] और बहुत वोह हैं जिन पर अ़ज़ाब

الْعَذَابُ ۭ وَمَنْ يُّهِنِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ مُّكْرِمٍ ۭ اِنَّ اللّٰهَ يَفْعَلُ مَا

मुक़र्रर हो चुका[48] और जिसे अल्लाह ज़लील करे[49] उसे कोई इ़ज़्ज़त देने वाला नहीं बेशक अल्लाह जो चाहे

يَشَاۗءُ ﴿١٨﴾ السجدة هٰذٰنِ خَصْمٰنِ اخْتَصَمُوْا فِيْ رَبِّهِمْ ۡ فَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا السجدة ٢

करे येह दो फ़रीक़ हैं[50] कि अपने रब में झगड़े[51] तो जो काफ़िर हुए

قُطِّعَتْ لَهُمْ ثِيَابٌ مِّنْ نَّارٍ ۭ يُصَبُّ مِنْ فَوْقِ رُءُوْسِهِمُ الْحَمِيْمُ ﴿١٩﴾ ج

उन के लिये आग के कपड़े बियोंते (काटे) गए हैं[52] और उन के सरों पर खौलता हुवा पानी डाला जाएगा[53]

41 : में उन के दीन को ग़लबा अ़ता फ़रमा कर 42 : उन के दरजे बुलन्द कर के 43 : या'नी अल्लाह तआ़ला अपने नबी की मदद ज़रूर फ़रमाएगा, जिसे उस से जलन हो वोह अपनी इन्तिहाई सअ़्य ख़त्म कर दे और जलन में मर भी जाए तो भी कुछ नहीं कर सकता। 44 : मोमिनीन को जन्नत अ़ता फ़रमाएगा और कुफ़्फ़ार को किसी क़िस्म के भी हों जहन्नम में दाख़िल करेगा। 45 : ऐ ह़बीबे अकरम ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم 46 : सज्दए ख़ुज़ूअ़ जैसा अल्लाह चाहे। 47 : या'नी मोमिनीन, मज़ीद बरआं सज्दए त़ाअ़त व इ़बादत भी। 48 : या'नी कुफ़्फ़ार। 49 : उस की शक़ावत के सबब 50 : या'नी मोमिनीन और पांचों क़िस्म के कुफ़्फ़ार जिन का ज़िक्र ऊपर किया गया है। 51 : या'नी उस के दीन के बारे में और उस की सिफ़ात में 52 : या'नी आग उन्हें हर त़रफ़ से घेर लेगी 53 : ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास

www.dawateislami.net

يُصْهَرُ بِهٖ مَا فِيْ بُطُوْنِهِمْ وَالْجُلُوْدُ ﴿٢٠﴾ وَلَهُمْ مَّقَامِعُ مِنْ حَدِيْدٍ ﴿٢١﴾

जिस से गल जाएगा जो कुछ उन के पेटों में है और उन की खालें[54] और उन के लिये लोहे के गुर्ज़ हैं[55]

كُلَّمَآ اَرَادُوْٓا اَنْ يَّخْرُجُوْا مِنْهَا مِنْ غَمٍّ اُعِيْدُوْا فِيْهَا ۗ وَذُوْقُوْا

जब घुटन के सबब उस में से निकलना चाहेंगे[56] फिर उस में लौटा दिये जाएंगे और हुक्म होगा कि चखो

عَذَابَ الْحَرِيْقِ ﴿٢٢﴾ اِنَّ اللّٰهَ يُدْخِلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ع ٢ ١٢ ٩

आग का अ़ज़ाब बेशक अल्लाह दाख़िल करेगा उन्हें जो ईमान लाए और अच्छे काम किये

جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ يُحَلَّوْنَ فِيْهَا مِنْ اَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ

बिहिश्तों में जिन के नीचे नहरें बहें उस में पहनाए जाएंगे सोने के कंगन

وَّلُؤْلُؤًا ۭ وَلِبَاسُهُمْ فِيْهَا حَرِيْرٌ ﴿٢٣﴾ وَهُدُوْٓا اِلَى الطَّيِّبِ مِنَ الْقَوْلِ ۚ

और मोती[57] और वहां उन की पोशाक रेशम है[58] और उन्हें पाकीज़ा बात की हिदायत की गई[59]

وَهُدُوْٓا اِلٰى صِرَاطِ الْحَمِيْدِ ﴿٢٤﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَيَصُدُّوْنَ عَنْ

और सब ख़ूबियों सराहे की राह बताई गई[60] बेशक वोह जिन्हों ने कुफ़्र किया और रोकते हैं

سَبِيْلِ اللّٰهِ وَالْمَسْجِدِ الْحَرَامِ الَّذِيْ جَعَلْنٰهُ لِلنَّاسِ سَوَاۗءَۨ الْعَاكِفُ

अल्लाह की राह[61] और उस अदब वाली मस्जिद से[62] जिसे हम ने सब लोगों के लिये मुक़र्रर किया कि उस में एक सा हक़ है वहां के रहने वाले

رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया ऐसा तेज़ गर्म कि उस का एक क़तरा दुन्या के पहाड़ों पर डाल दिया जाए तो उन को गला डाले। **54 :** हदीस शरीफ़ में है : फिर उन्हें वैसा ही कर दिया जाएगा। (ترمذی) **55 :** जिन से उन को मारा जाएगा। **56 :** या'नी दोज़ख़ में से तो गुर्ज़ों से मार कर **57 :** ऐसे जिन की चमक मशरिक़ से मग़रिब तक रोशन कर डाले। (ترمذی) **58 :** जिस का पहनना दुन्या में मर्दों को हराम है। बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है : सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस ने दुन्या में रेशम पहना आख़िरत में न पहनेगा। **59 :** या'नी दुन्या में। और पाकीज़ा बात से कलिमए तौहीद मुराद है। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा क़ुरआन मुराद है। **60 :** या'नी अल्लाह का दीने इस्लाम। **61 :** या'नी उस के दीन और उस की इ़ताअ़त से **62 :** या'नी उस में दाख़िल होने से। **शाने नुज़ूल :** येह आयत सुफ़्यान बिन ह़र्ब वग़ैरा के ह़क़ में नाज़िल हुई जिन्हों ने सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم को मक्कए मुकर्रमा में दाख़िल होने से रोका था। मस्जिदे ह़राम से या ख़ास का'बए मुअ़ज़्ज़मा मुराद है जैसा कि इमाम शाफ़ेई رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं। इस तक़्दीर पर मा'ना येह होंगे कि वोह तमाम लोगों का क़िब्ला है वहां के रहने वाले और परदेसी सब बराबर हैं सब के लिये इस की ता'ज़ीम व ह़ुरमत और इस में अदाए मनासिके ह़ज यक्सां है और त़वाफ़ व नमाज़ की फ़ज़ीलत में शहरी और परदेसी के दरमियान कोई फ़र्क़ नहीं। और इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के नज़्दीक यहां मस्जिदे ह़राम से मक्कए मुकर्रमा या'नी जमीअ़ ह़रम मुराद है। इस तक़्दीर पर मा'ना येह होंगे कि ह़रम शरीफ़ शहरी और परदेसी सब के लिये यक्सां है, इस में रहने और ठहरने का सब किसी को ह़क़ है बजुज़ इस के कि कोई किसी को निकाले नहीं, इसी लिये इमाम साह़िब मक्कए मुकर्रमा की अराज़ी की बैअ़ और इस के किराए को मन्अ़ फ़रमाते हैं जैसा कि ह़दीस शरीफ़ में है : सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मक्कए मुकर्रमा ह़राम है इस की अराज़ी फ़रोख़्त न की जाएं। (تفسیر احمدی)

www.dawateislami.net

ع ٣ ١٠

فِيْهِ وَالْبَادِ ؕ وَمَنْ يُّرِدْ فِيْهِ بِاِلْحَادٍۭ بِظُلْمٍ نُّذِقْهُ مِنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٢٥﴾

और परदेसी का और जो इस में किसी ज़ियादती का नाहक़ इरादा करे हम उसे दर्दनाक अ़ज़ाब चखाएंगे[63]

وَ اِذْ بَوَّاْنَا لِاِبْرٰهِيْمَ مَكَانَ الْبَيْتِ اَنْ لَّا تُشْرِكْ بِيْ شَيْـًٔا وَّ طَهِّرْ

और जब कि हम ने इब्राहीम को उस घर का ठिकाना ठीक बता दिया[64] और हुक्म दिया कि मेरा कोई शरीक न कर और मेरा घर

بَيْتِيَ لِلطَّآئِفِيْنَ وَ الْقَآئِمِيْنَ وَ الرُّكَّعِ السُّجُوْدِ ﴿٢٦﴾ وَ اَذِّنْ فِي النَّاسِ

सुथरा रख[65] त़वाफ़ वालों और ए'तिकाफ़ वालों और रुकूअ़ सज्दे वालों के लिये[66] और लोगों में ह़ज की आ़म

بِالْحَجِّ يَاْتُوْكَ رِجَالًا وَّ عَلٰى كُلِّ ضَامِرٍ يَّاْتِيْنَ مِنْ كُلِّ فَجٍّ عَمِيْقٍ ﴿٢٧﴾ۙ

निदा कर दे[67] वोह तेरे पास ह़ाज़िर होंगे पियादा और हर दुबली ऊंटनी पर कि हर दूर की राह से आती हैं[68]

لِّيَشْهَدُوْا مَنَافِعَ لَهُمْ وَ يَذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ فِيْۤ اَيَّامٍ مَّعْلُوْمٰتٍ عَلٰى مَا

ताकि वोह अपना फ़ाएदा पाएं[69] और अल्लाह का नाम लें[70] जाने हुए दिनों में[71] इस पर कि

رَزَقَهُمْ مِّنْۢ بَهِيْمَةِ الْاَنْعَامِ ۚ فَكُلُوْا مِنْهَا وَ اَطْعِمُوا الْبَآئِسَ

उन्हें रोज़ी दी बे ज़बान चौपाए[72] तो उन में से ख़ुद खाओ और मुसीबत ज़दा मोह़ताज

63 : اِلْحَادٍۭ بِظُلْمٍ नाहक़ ज़ियादती से या शिर्क व बुत परस्ती मुराद है। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा कि हर मम्नूअ़ क़ौल व फ़े'ल मुराद है ह़त्ता कि ख़ादिम को गाली देना भी। बा'ज़ ने कहा इस से मुराद है ह़रम में बिग़ैर एह़राम के दाख़िल होना या मम्नूआ़ते ह़रम का इरतिकाब करना मिस्ल शिकार मारने और दरख़्त काटने के और ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया मुराद येह है कि जो तुझे न क़त्ल करे तू उसे क़त्ल करे या जो तुझ पर ज़ुल्म न करे तू उस पर ज़ुल्म करे। **शाने नुज़ूल :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने अ़ब्दुल्लाह बिन उनैस को दो आदमियों के साथ भेजा था जिन में एक मुहाजिर था दूसरा अन्सारी, उन लोगों ने अपने अपने मुफ़ाख़रे नसब बयान किये तो अ़ब्दुल्लाह बिन उनैस को ग़ुस्सा आया और उस ने अन्सारी को क़त्ल कर दिया और ख़ुद मुरतद हो कर मक्कए मुकर्रमा की त़रफ़ भाग गया, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई। **64 :** ता'मीरे का'बा शरीफ़ के वक़्त पहले इ़मारते का'बा ह़ज़रते आदम عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने बनाई थी और तूफ़ाने नूह़ के वक़्त वोह आस्मान पर उठा ली गई अल्लाह तआ़ला ने एक हवा मुक़र्रर की जिस ने उस की जगह को साफ़ कर दिया और एक क़ौल येह है कि अल्लाह तआ़ला ने एक अब्र भेजा जो ख़ास उस बुक़्अ़ (ज़मीन के टुकड़े) के मुक़ाबिल था जहां का'बए मुअ़ज़्ज़मा की इ़मारत थी, इस त़रह़ ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام को का'बा शरीफ़ की जगह बताई गई और आप ने उस की क़दीम बुन्याद पर इ़मारते का'बा ता'मीर की और अल्लाह तआ़ला ने आप को वह़्य फ़रमाई। **65 :** शिर्क से और बुतों से और हर क़िस्म की नजासतों से **66 :** या'नी नमाज़ियों के लिये। **67 :** चुनान्चे ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام ने अबू क़ुबैस पहाड़ पर चढ़ कर जहान के लोगों को निदा कर दी कि बैतुल्लाह का ह़ज करो। जिन के मक़्दूर में ह़ज है उन्हों ने बापों की पुश्तों और माओं के पेटों से जवाब दिया لَبَّیْکَ اَللّٰھُمَّ لَبَّیْک। ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का क़ौल है कि इस आयत में اَذِّنْ का ख़ित़ाब सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को है, चुनान्चे ह़ज्जतुल वदाअ़ में ए'लान फ़रमा दिया और इर्शाद किया कि ऐ लोगो अल्लाह ने तुम पर ह़ज फ़र्ज़ किया तो ह़ज करो। **68 :** और कस्रते सैर व सफ़र से दुबली हो जाती हैं। **69 :** दीनी भी दुन्यवी भी जो इस इ़बादत के साथ ख़ास हैं दूसरी इ़बादत में नहीं पाए जाते। **70 :** वक़्ते ज़ब्ह़। **71 :** जाने हुए दिनों से ज़िल ह़िज्जा का अ़शरा मुराद है (या'नी पहले दस दिन) जैसा कि ह़ज़रते अ़ली और इब्ने अ़ब्बास व ह़सन व क़तादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم का क़ौल है और येही मज़्हब है हमारे इमामे आ'ज़म ह़ज़रते अबू ह़नीफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का। और साह़िबैन के नज़्दीक जाने हुए दिनों से अय्यामे नह़र (दस, ग्यारह, बारह ज़िल ह़िज्जा) मुराद हैं येह क़ौल है ह़ज़रते इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا का और हर तक़्दीर पर यहां उन दिनों से ख़ास रोज़े ईद मुराद है। (تفسیر احمدی) **72 :** ऊंट, गाय, बकरी, भेड़।

www.dawateislami.net

الْفَقِيْرَ ﴿۲۸﴾ ثُمَّ لْيَقْضُوْا تَفَثَهُمْ وَلْيُوْفُوْا نُذُوْرَهُمْ وَلْيَطَّوَّفُوْا بِالْبَيْتِ

को खिलाओ[73] फिर अपना मैल कुचैल उतारें[74] और अपनी मन्नतें पूरी करें[75] और उस आज़ाद घर का

الْعَتِيْقِ ﴿۲۹﴾ ذٰلِكَ ۗ وَمَنْ يُّعَظِّمْ حُرُمٰتِ اللّٰهِ فَهُوَ خَيْرٌ لَّهٗ عِنْدَ رَبِّهٖ ؕ وَ

तवाफ़ करें[76] बात येह है और जो अल्लाह की हुरमतों की ता'ज़ीम करे[77] तो वोह उस के लिये उस के रब के यहां भला है और

اُحِلَّتْ لَكُمُ الْاَنْعَامُ اِلَّا مَا يُتْلٰى عَلَيْكُمْ فَاجْتَنِبُوا الرِّجْسَ مِنَ

तुम्हारे लिये हलाल किये गए बे ज़बान चौपाए[78] सिवा उन के जिन की मुमानअत तुम पर पढ़ी जाती है[79] तो दूर हो बुतों की

الْاَوْثَانِ وَاجْتَنِبُوْا قَوْلَ الزُّوْرِ ﴿۳۰﴾ ۙ حُنَفَآءَ لِلّٰهِ غَيْرَ مُشْرِكِيْنَ بِهٖ ؕ وَ

गन्दगी से[80] और बचो झूटी बात से एक अल्लाह के हो कर कि उस का साझी (शरीक) किसी को न करो और

مَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَكَاَنَّمَا خَرَّ مِنَ السَّمَآءِ فَتَخْطَفُهُ الطَّيْرُ اَوْ تَهْوِيْ

जो अल्लाह का शरीक करे वोह गोया गिरा आस्मान से कि परिन्दे उसे उचक ले जाते हैं[81] या हवा

بِهِ الرِّيْحُ فِيْ مَكَانٍ سَحِيْقٍ ﴿۳۱﴾ ذٰلِكَ ۗ وَمَنْ يُّعَظِّمْ شَعَآئِرَ اللّٰهِ فَاِنَّهَا

उसे किसी दूर जगह फेंकती है[82] बात येह है और जो अल्लाह के निशानों की ता'ज़ीम करे तो येह

مِنْ تَقْوَى الْقُلُوْبِ ﴿۳۲﴾ لَكُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ اِلٰۤى اَجَلٍ مُّسَمًّى ثُمَّ مَحِلُّهَاۤ

दिलों की परहेज़ गारी से है[83] तुम्हारे लिये चौपायों में फ़ाएदे हैं[84] एक मुक़र्रर मीआद तक[85] फिर उन का पहुंचना है

اِلَى الْبَيْتِ الْعَتِيْقِ ﴿۳۳﴾ ع وَلِكُلِّ اُمَّةٍ جَعَلْنَا مَنْسَكًا لِّيَذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ ع ۸

उस आज़ाद घर तक[86] और हर उम्मत के लिये[87] हम ने एक कुरबानी मुक़र्रर फ़रमाई कि अल्लाह का नाम लें

73 : ततव्वोअ़ और मुतअ़ा व क़िरान व हर एक हदी से जिन का इस आयत में बयान है खाना जाइज़ है, बाक़ी हदाया से जाइज़ नहीं। (تفسیر احمدی و مدارک) 74 : मूंछें कतरवाएं नाखुन तराशें बग़लों और ज़ेरे नाफ़ के बाल दूर करें। 75 : जो इन्हों ने मानी हों। 76 : इस से तवाफ़े ज़ियारत मुराद है। मसाइले हज बित्तफ़्सील सूरए बक़र पारह दो में ज़िक्र हो चुके। 77 : या'नी उस के अहकाम की ख़्वाह वोह मनासिके हज हों या इन के सिवा और अहकाम। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने इस से मनासिके हज मुराद लिये हैं और बा'ज़ ने बैते हराम व मश्अ़रे हराम व शहरे हराम व बलदे हराम व मस्जिदे हराम मुराद लिये हैं। 78 : कि उन्हें ज़ब्ह कर के खाओ। 79 : कुरआने पाक में जैसे कि सूरए माइदह की आयत حُرِّمَتْ عَلَيْكُمْ में बयान फ़रमाई गई। 80 : जिन की परस्तिश करना बद तरीन गन्दगी से आलूदा होना है। 81 : और बोटी बोटी कर के खा जाते हैं 82 : मुराद येह है कि शिर्क करने वाला अपनी जान को बद तरीन हलाकत में डालता है। ईमान को बुलन्दी में आस्मान से तश्बीह दी गई और ईमान तर्क करने वाले को आस्मान से गिरने वाले के साथ और उस की ख़्वाहिशाते नफ़्सानिय्या को जो उस की फ़िक्रों को मुन्तशिर करती हैं बोटी बोटी ले जाने वाले परिन्दे के साथ और शयातीन को जो उस को वादिये ज़लालत में फेंकते हैं हवा के साथ तश्बीह दी गई और इस नफ़ीस तश्बीह से शिर्क का अन्जामे बद समझाया गया। 83 : हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि شعائر الله से मुराद बुदने और हदाया हैं और इन की ता'ज़ीम येह है कि फ़र्बा खूब सूरत क़ीमती लिये जाएं। 84 : वक़्ते ज़रूरत इन पर सुवार होने और वक़्ते हाजत इन के दूध पीने के 85 : या'नी उन के ज़ब्ह के वक़्त तक। 86 : या'नी हरम शरीफ़ तक जहां वोह ज़ब्ह किये जाएं। 87 : पिछली ईमानदार उम्मतों में से।

www.dawateislami.net

عَلٰى مَا رَزَقَهُمْ مِّنْۢ بَهِيْمَةِ الْاَنْعَامِ ؕ فَاِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ فَلَهٗۤ اَسْلِمُوْا ؕ

उस के दिये हुए बे ज़बान चौपायों पर[88] तो तुम्हारा मा'बूद एक मा'बूद है[89] तो उसी के हुज़ूर गरदन रखो[90]

وَبَشِّرِ الْمُخْبِتِيْنَ ۙ﴿۳۴﴾ الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَجِلَتْ قُلُوْبُهُمْ وَ

और ऐ महबूब खुशी सुना दो उन तवाज़ोअ़ वालों को कि जब अल्लाह का ज़िक्र होता है उन के दिल डरने लगते हैं[91] और

الصّٰبِرِيْنَ عَلٰى مَاۤ اَصَابَهُمْ وَالْمُقِيْمِى الصَّلٰوةِ ۙ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ

जो उफ्ताद पड़े उस के सहने वाले और नमाज़ बरपा (क़ाइम) रखने वाले और हमारे दिये से ख़र्च

يُنْفِقُوْنَ ﴿۳۵﴾ وَالْبُدْنَ جَعَلْنٰهَا لَكُمْ مِّنْ شَعَآئِرِ اللّٰهِ لَكُمْ فِيْهَا خَيْرٌ ۖ

करते हैं[92] और क़ुरबानी के डीलदार (भारी जसामत वाले) जानवर ऊंट और गाय हम ने तुम्हारे लिये अल्लाह की निशानियों से किये[93] तुम्हारे लिये उन में भलाई है[94]

فَاذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ عَلَيْهَا صَوَآفَّ ۚ فَاِذَا وَجَبَتْ جُنُوْبُهَا فَكُلُوْا مِنْهَا وَ

तो उन पर अल्लाह का नाम लो[95] एक पाउं बंधे तीन पाउं से खड़े[96] फिर जब उन की करवटें गिर जाएं[97] तो उन में से खुद खाओ[98] और

اَطْعِمُوا الْقَانِعَ وَالْمُعْتَرَّ ؕ كَذٰلِكَ سَخَّرْنٰهَا لَكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿۳۶﴾

सब्र से बैठने वाले और भीक मांगने वाले को खिलाओ हम ने यूंही उन को तुम्हारे बस में दे दिया कि तुम एहसान मानो

لَنْ يَّنَالَ اللّٰهَ لُحُوْمُهَا وَلَا دِمَآؤُهَا وَلٰكِنْ يَّنَالُهُ التَّقْوٰى مِنْكُمْ ؕ

अल्लाह को हरगिज़ न उन के गोश्त पहुंचते हैं न उन के ख़ून हां तुम्हारी परहेज़ गारी उस तक बारयाब होती है[99]

كَذٰلِكَ سَخَّرَهَا لَكُمْ لِتُكَبِّرُوا اللّٰهَ عَلٰى مَا هَدٰىكُمْ ؕ وَبَشِّرِ

यूंही उन को तुम्हारे बस में कर दिया कि तुम अल्लाह की बड़ाई बोलो इस पर कि तुम को हिदायत फ़रमाई और ऐ महबूब खुश ख़बरी सुनाओ

الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۳۷﴾ اِنَّ اللّٰهَ يُدٰفِعُ عَنِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا

नेकी वालों को[100] बेशक अल्लाह बलाएं टालता है मुसल्मानों की[101] बेशक अल्लाह दोस्त

88 : उन के ज़ब्ह के वक़्त। 89 : तो ज़ब्ह के वक़्त सिर्फ़ उसी का नाम लो, इस आयत में दलील है इस पर कि नाम ख़ुदा का ज़िक्र करना ज़ब्ह के लिये शर्त है। अल्लाह तआ़ला ने हर एक उम्मत के लिये मुक़र्रर फ़रमा दिया था कि उस के लिये ब तरीक़े तक़र्रुब क़ुरबानी करें और तमाम क़ुरबानियों पर उसी का नाम लिया जाए। 90 : और इख़्लास के साथ उस की इताअ़त करो। 91 : उस के हैबतो जलाल से। 92 : या'नी सदक़ा देते हैं। 93 : या'नी उस के आ'लामे दीन से। 94 : दुन्या में नफ़्अ़ और आख़िरत में अज्रो सवाब। 95 : उन के ज़ब्ह के वक़्त जिस हाल में कि वोह हों 96 : ऊंट के ज़ब्ह का येही मस्नून तरीक़ा है। 97 : या'नी बा'दे ज़ब्ह उन के पहलू ज़मीन पर गिरें और उन की हरकत साकिन हो जाए 98 : अगर तुम चाहो। 99 : या'नी क़ुरबानी करने वाले सिर्फ़ निय्यत के इख़्लास और शुरूते तक़्वा की रिआ़यत से अल्लाह तआ़ला को राज़ी कर सकते हैं। **शाने नुज़ूल :** ज़मानए जाहिलिय्यत के कुफ़्फ़ार अपनी क़ुरबानियों के ख़ून से का'बए मुअ़ज़्ज़मा की दीवारों को आलूदा करते थे और इस को सबबे तक़र्रुब जानते थे, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई। 100 : सवाब की। 101 : और उन की मदद फ़रमाता है।

www.dawateislami.net

يُحِبُّ كُلَّ خَوَّانٍ كَفُوْرٍ ﴿٣٨﴾ اُذِنَ لِلَّذِيْنَ يُقٰتَلُوْنَ بِاَنَّهُمْ ظُلِمُوْا ؕ وَ ع ٥ ١٢

नहीं रखता हर बड़े दग़ाबाज़ नाशुक्रे को[102] परवानगी [इजाज़त] अ़ता हुई उन्हें जिन से काफ़िर लड़ते हैं[103] इस बिना पर कि उन पर ज़ुल्म हुवा[104] और

اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى نَصْرِهِمْ لَقَدِيْرُ ﴿٣٩﴾ الَّذِيْنَ اُخْرِجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ بِغَيْرِ

बेशक अल्लाह उन की मदद करने पर ज़रूर क़ादिर है वोह जो अपने घरों से नाहक़

حَقٍّ اِلَّاۤ اَنْ يَّقُوْلُوْا رَبُّنَا اللّٰهُ ؕ وَلَوْ لَا دَفْعُ اللّٰهِ النَّاسَ بَعْضَهُمْ

निकाले गए[105] सिर्फ़ इतनी बात पर कि उन्हों ने कहा हमारा रब अल्लाह है[106] और अल्लाह अगर आदमियों में एक को दूसरे से

بِبَعْضٍ لَّهُدِّمَتْ صَوَامِعُ وَ بِيَعٌ وَّ صَلَوٰتٌ وَّ مَسٰجِدُ يُذْكَرُ فِيْهَا اسْمُ

दफ़्अ़ न फ़रमाता[107] तो ज़रूर ढा दी जातीं ख़ानक़ाहें[108] और गिरजा[109] और कलीसा[110] और मस्जिदें[111] जिन में अल्लाह का ब कसरत

اللّٰهِ كَثِيْرًا ؕ وَلَيَنْصُرَنَّ اللّٰهُ مَنْ يَّنْصُرُهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَقَوِيٌّ عَزِيْزٌ ﴿٤٠﴾

नाम लिया जाता है और बेशक अल्लाह ज़रूर मदद फ़रमाएगा उस की जो उस के दीन की मदद करेगा बेशक ज़रूर अल्लाह क़ुदरत वाला ग़ालिब है

اَلَّذِيْنَ اِنْ مَّكَّنّٰهُمْ فِي الْاَرْضِ اَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ وَ

वोह लोग कि अगर हम उन्हें ज़मीन में क़ाबू दें[112] तो नमाज़ बरपा रखें और ज़कात दें और

اَمَرُوْا بِالْمَعْرُوْفِ وَنَهَوْا عَنِ الْمُنْكَرِ ؕ وَ لِلّٰهِ عَاقِبَةُ الْاُمُوْرِ ﴿٤١﴾ وَ

भलाई का हुक्म करें और बुराई से रोकें[113] और अल्लाह ही के लिये सब कामों का अन्जाम और

اِنْ يُّكَذِّبُوْكَ فَقَدْ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ وَّ عَادٌ وَّ ثَمُوْدُ ﴿٤٢﴾ وَقَوْمُ

अगर येह तुम्हारी तक्ज़ीब करते हैं[114] तो बेशक इन से पहले झुटला चुकी है नूह़ की क़ौम और आ़द[115] और समूद[116] और इब्राहीम

102 : या'नी कुफ़्फ़ार को जो अल्लाह और उस के रसूल की ख़ियानत और ख़ुदा की ने'मतों की नाशुक्री करते हैं। **103 :** जिहाद की। **104** **शाने नुज़ूल :** कुफ़्फ़ारे मक्का अस्ह़ाबे रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को रोज़मर्रा हाथ और ज़बान से शदीद ईज़ाएं देते और आज़ार पहुंचाते रहते थे और सहाबा हुज़ूर के पास इस ह़ाल में पहुंचते थे कि किसी का सर फटा है किसी का हाथ टूटा है किसी का पाउं बंधा हुवा है, रोज़मर्रा इस क़िस्म की शिकायतें बारगाहे अक़्दस में पहुंचती थीं और अस्ह़ाबे किराम कुफ़्फ़ार के मज़ालिम की हुज़ूर के दरबार में फ़रियादें करते, हुज़ूर येह फ़रमा दिया करते कि सब्र करो मुझे अभी जिहाद का हुक्म नहीं दिया गया है, जब हुज़ूर ने मदीनए त़य्यिबा को हिजरत फ़रमाई तब येह आयत नाज़िल हुई और येह वोह पहली आयत है जिस में कुफ़्फ़ार के साथ जंग करने की इजाज़त दी गई है। **105 :** और बे वत़न किये गए **106 :** और येह कलाम ह़क़ है और ह़क़ पर घरों से निकालना और बे वत़न करना क़त़्अ़न नाह़क़। **107 :** जिहाद की इजाज़त दे कर और ह़ुदूद क़ाइम फ़रमा कर तो नतीजा येह होता कि मुश्रिकीन का इस्तीला (क़ब्ज़ा) हो जाता और कोई दीनो मिल्लत वाला उन के दस्ते तअ़द्दी (ज़ुल्म) से न बचता। **108 :** राहिबों की **109 :** नसरानियों के **110 :** यहूदियों के **111 :** मुसल्मानों की **112 :** और उन के दुश्मनों के मुक़ाबिल उन की मदद फ़रमाएं **113 :** इस में ख़बर दी गई है कि आयिन्दा मुहाजिरीन को ज़मीन में तसर्रुफ़ अ़त़ा फ़रमाने के बा'द उन की सीरतें ऐसी पाकीज़ा रहेंगी और वोह दीन के कामों में इख़्लास के साथ मश्ग़ूल रहेंगे। इस में ख़ुलफ़ाए राशिदीन महदिय्यीन के अ़द्ल और उन के तक़्वा व परहेज़ गारी की दलील है जिन्हें अल्लाह तआ़ला ने तम्कीन व हुकूमत अ़त़ा फ़रमाई और सीरते आ़दिला अ़त़ा की। **114 :** ऐ हबीबे अकरम ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم **115 :** ह़ज़रते हूद की क़ौम **116 :** ह़ज़रते सालेह़ की क़ौम।

اِبْرٰهِيْمَ وَقَوْمُ لُوْطٍ ﴿٤٣﴾ وَّاَصْحٰبُ مَدْيَنَ ۚ وَكُذِّبَ مُوْسٰى فَاَمْلَيْتُ

की क़ौम और लूत़ की क़ौम और मद्यन वाले[117] और मूसा की तक्ज़ीब हुई[118] तो मैं ने काफ़िरों

لِلْكٰفِرِيْنَ ثُمَّ اَخَذْتُهُمْ ۚ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيْرِ ﴿٤٤﴾ فَكَاَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ

को ढील दी[119] फिर उन्हें पकड़ा[120] तो कैसा हुवा मेरा अ़ज़ाब[121] और कितनी ही बस्तियां हम ने

اَهْلَكْنٰهَا وَهِيَ ظَالِمَةٌ فَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلٰى عُرُوْشِهَا وَبِئْرٍ مُّعَطَّلَةٍ وَّقَصْرٍ

खपा दीं[122] कि वोह सितमगार थीं[123] तो अब वोह अपनी छतों पर ढई (गिरी) पड़ी हैं और कितने कूंए बेकार पड़े[124] और कितने महल

مَّشِيْدٍ ﴿٤٥﴾ اَفَلَمْ يَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَتَكُوْنَ لَهُمْ قُلُوْبٌ يَّعْقِلُوْنَ

गच किये हुए[125] तो क्या ज़मीन में न चले[126] कि उन के दिल हों जिन से समझें[127]

بِهَآ اَوْ اٰذَانٌ يَّسْمَعُوْنَ بِهَا ۚ فَاِنَّهَا لَا تَعْمَى الْاَبْصَارُ وَلٰكِنْ تَعْمَى

या कान हों जिन से सुनें[128] तो येह कि आंखें अन्धी नहीं होतीं[129] बल्कि वोह दिल

الْقُلُوْبُ الَّتِيْ فِي الصُّدُوْرِ ﴿٤٦﴾ وَيَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالْعَذَابِ وَلَنْ

अन्धे होते हैं जो सीनों में हैं[130] और येह तुम से अ़ज़ाब मांगने में जल्दी करते हैं[131] और अल्लाह

يُّخْلِفَ اللّٰهُ وَعْدَهٗ ؕ وَاِنَّ يَوْمًا عِنْدَ رَبِّكَ كَاَلْفِ سَنَةٍ مِّمَّا

हरगिज़ अपना वा'दा झूटा न करेगा[132] और बेशक तुम्हारे रब के यहां[133] एक दिन ऐसा है जैसे तुम लोगों की

تَعُدُّوْنَ ﴿٤٧﴾ وَكَاَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ اَمْلَيْتُ لَهَا وَهِيَ ظَالِمَةٌ ثُمَّ اَخَذْتُهَا ۚ

गिनती में हज़ार बरस[134] और कितनी बस्तियां कि हम ने उन को ढील दी इस ह़ाल पर कि वोह सितमगार थीं फिर मैं ने उन्हें पकड़ा[135]

117 : या'नी ह़ज़रते शुऐ़ब की क़ौम। **118 :** यहां मूसा की क़ौम न फ़रमाया क्यूं कि ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की क़ौम बनी इसराईल ने आप की तक्ज़ीब न की थी बल्कि फ़िरऔ़न की क़ौम क़िब्तियों ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की तक्ज़ीब की थी। इन क़ौमों का तज़्किरा और हर एक के अपने रसूल की तक्ज़ीब करने का बयान सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के तस्कीने ख़ातिर (दिली तसल्ली) के लिये है कि कुफ़्फ़ार का येह क़दीमी त़रीक़ा है पिछले अम्बिया के साथ भी येही दस्तूर रहा है। **119 :** और उन के अ़ज़ाब में ताख़ीर की और उन्हें मोहलत दी **120 :** और उन के कुफ़्रो सरकशी की सज़ा दी **121 :** आप की तक्ज़ीब करने वालों को चाहिये कि अपने अन्जाम को सोचें और इ़ब्रत ह़ासिल करें। **122 :** और वहां के रहने वालों को हलाक कर दिया **123 :** या'नी वहां के रहने वाले काफ़िर थे। **124 :** कि उन से कोई पानी भरने वाला नहीं **125 :** वीरान पड़े हैं। **126 :** कुफ़्फ़ार कि इन ह़ालात का मुशाहदा करें **127 :** कि अम्बिया की तक्ज़ीब का क्या अन्जाम हुवा और इ़ब्रत ह़ासिल करें। **128 :** पिछली उम्मतों के ह़ालात और उन का हलाक होना और उन की बस्तियों की वीरानी कि इस से इ़ब्रत ह़ासिल हो। **129 :** या'नी कुफ़्फ़ार की ज़ाहिरी ह़िस बातिल नहीं हुई है वोह इन आंखों से देखने की चीज़ें देखते हैं। **130 :** और दिलों ही का अन्धा होना ग़ज़ब है इसी लिये आदमी दीन की राह पाने से मह़रूम रहता है। **131 :** या'नी कुफ़्फ़ारे मक्का मिस्ल नज़्र बिन ह़ारिस वग़ैरा के और येह जल्दी करना उन का इस्तिह़्ज़ा के त़रीक़े पर था। **132 :** और ज़रूर ह़स्बे वा'दा अ़ज़ाब नाज़िल फ़रमाएगा। चुनान्चे येह वा'दा बद्र में पूरा हवा। **133 :** आख़िरत में अ़ज़ाब का **134 :** तो येह कुफ़्फ़ार क्या समझ कर अ़ज़ाब की जल्दी करते हैं। **135 :** और दुन्या में उन पर अ़ज़ाब नाज़िल किया।

www.dawateislami.net

وَ اِلَیَّ الْمَصِیْرُ ﴿۴۸﴾ قُلْ یٰۤاَیُّهَا النَّاسُ اِنَّمَاۤ اَنَا لَكُمْ نَذِیْرٌ مُّبِیْنٌ ﴿۴۹﴾

और मेरी ही तरफ़ पलट कर आना है[136] तुम फ़रमा दो कि ऐ लोगो ! मैं तो येही तुम्हारे लिये सरीह डर सुनाने वाला हूं

فَالَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّ رِزْقٌ كَرِیْمٌ ﴿۵۰﴾ وَ

तो जो ईमान लाए और अच्छे काम किये उन के लिये बख़्शिश है और इ़ज़्ज़त की रोज़ी[137] और

الَّذِیْنَ سَعَوْا فِیْۤ اٰیٰتِنَا مُعٰجِزِیْنَ اُولٰٓىٕكَ اَصْحٰبُ الْجَحِیْمِ ﴿۵۱﴾ وَ مَاۤ

वोह जो कोशिश करते हैं हमारी आयतों में हार जीत के इरादे से[138] वोह जहन्नमी हैं और

اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَّسُوْلٍ وَّ لَا نَبِیٍّ اِلَّاۤ اِذَا تَمَنّٰۤى اَلْقَى الشَّیْطٰنُ

हम ने तुम से पहले जितने रसूल या नबी भेजे[139] सब पर येह वाक़िआ़ गुज़रा है कि जब उन्हों ने पढ़ा तो शैत़ान ने उन के पढ़ने में लोगों

فِیْۤ اُمْنِیَّتِهٖ ۚ فَیَنْسَخُ اللّٰهُ مَا یُلْقِی الشَّیْطٰنُ ثُمَّ یُحْكِمُ اللّٰهُ اٰیٰتِهٖ ؕ وَ

पर कुछ अपनी त़रफ़ से मिला दिया तो मिटा देता है **अल्लाह** उस शैत़ान के डाले हुए को फिर **अल्लाह** अपनी आयतें पक्की कर देता है[140] और

اللّٰهُ عَلِیْمٌ حَكِیْمٌ ﴿۵۲﴾ لِّیَجْعَلَ مَا یُلْقِی الشَّیْطٰنُ فِتْنَةً لِّلَّذِیْنَ فِیْ

अल्लाह इ़ल्म व ह़िक्मत वाला है ताकि शैत़ान के डाले हुए को फ़ितना कर दे[141] उन के लिये

قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ وَّ الْقَاسِیَةِ قُلُوْبُهُمْ ؕ وَ اِنَّ الظّٰلِمِیْنَ لَفِیْ شِقَاقٍ

जिन के दिलों में बीमारी है[142] और जिन के दिल सख़्त हैं[143] और बेशक सितमगार[144] धुर के (इन्तिहाई सख़्त)

بَعِیْدٍ ﴿۵۳﴾ وَّ لِیَعْلَمَ الَّذِیْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ اَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَیُؤْمِنُوْا

झगड़ालू हैं और इस लिये कि जान लें वोह जिन को इ़ल्म मिला है[145] कि वोह[146] तुम्हारे रब के पास से ह़क़ है तो उस पर ईमान लाएं

بِهٖ فَتُخْبِتَ لَهٗ قُلُوْبُهُمْ ؕ وَ اِنَّ اللّٰهَ لَهَادِ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْۤا اِلٰى صِرَاطٍ

तो झुक जाएं उस के लिये उन के दिल और बेशक **अल्लाह** ईमान वालों को सीधी राह

136 : आख़िरत में। **137 :** जो कभी मुन्क़त़अ़ न हो वोह जन्नत है। **138 :** कि कभी इन आयात को सेह़र कहते हैं कभी शे'र कभी पिछलों के क़िस्से और वोह येह ख़याल करते हैं कि इस्लाम के साथ उन का येह मक्र चल जाएगा। **139 :** नबी और रसूल में फ़र्क़ है नबी आ़म है और रसूल ख़ास। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि रसूल शर्अ़ के वाज़ेअ़ होते हैं और नबी इस के ह़ाफ़िज़ और निगहबान। **शाने नुज़ूल :** जब सूरए वन्नज्म नाज़िल हुई तो सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने मस्जिदे ह़राम में इस की तिलावत फ़रमाई और बहुत आहिस्ता आहिस्ता आयतों के दरमियान वक़्फ़ा फ़रमाते हुए जिस से सुनने वाले ग़ौर भी कर सकें और याद करने वालों को याद करने में मदद भी मिले, जब आप ने आयत وَ مَنٰوةَ الثَّالِثَةَ الْاُخْرٰى पढ़ कर ह़स्बे दस्तूर वक़्फ़ा फ़रमाया तो शैत़ान ने मुश्रिकीन के कान में इस से मिला कर दो कलिमे ऐसे कह दिये जिन से बुतों की ता'रीफ़ निकलती थी। जिब्रीले अमीन ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर येह ह़ाल अ़र्ज़ किया, इस से हुज़ूर को रन्ज हुवा। **अल्लाह** तआ़ला ने आप की तसल्ली के लिये येह आयत नाज़िल फ़रमाई। **140 :** जो पैग़म्बर पढ़ते हैं और उन्हें शैत़ानी कलिमात के ख़ल्त़ से मह़फ़ूज़ फ़रमाता है। **141 :** और इब्तिला व आज़्माइश बना दे **142 :** शक और निफ़ाक़ की। **143 :** ह़क़ को क़बूल नहीं करते और येह मुश्रिकीन हैं। **144 :** या'नी मुश्रिकीन व

www.dawateislami.net

مُّسْتَقِيْمٍ ﴿۵۴﴾ وَلَا يَزَالُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِيْ مِرْيَةٍ مِّنْهُ حَتّٰى تَاْتِيَهُمُ

चलाने वाला है और काफ़िर उस से[147] हमेशा शक में रहेंगे यहां तक कि उन पर

السَّاعَةُ بَغْتَةً اَوْ يَاْتِيَهُمْ عَذَابُ يَوْمٍ عَقِيْمٍ ﴿۵۵﴾ اَلْمُلْكُ يَوْمَئِذٍ

क़ियामत आ जाए अचानक[148] या उन पर ऐसे दिन का अ़ज़ाब आए जिस का फल उन के लिये कुछ अच्छा न हो[149] बादशाही उस दिन[150]

لِّلّٰهِ ؕ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ ؕ فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فِيْ جَنّٰتِ

अल्लाह ही की है वोह उन में फ़ैसला कर देगा तो जो ईमान लाए और[151] अच्छे काम किये वोह चैन के

النَّعِيْمِ ﴿۵۶﴾ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا فَاُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ

बाग़ों में हैं और जिन्हों ने कुफ़्र किया और हमारी आयतें झुटलाई उन के लिये ज़िल्लत का

ع ۹/۱۴ مُّهِيْنٌ ع ﴿۵۷﴾ وَالَّذِيْنَ هَاجَرُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ثُمَّ قُتِلُوْٓا اَوْ مَاتُوْا

अ़ज़ाब है और वोह जिन्हों ने **अल्लाह** की राह में अपने घरबार छोड़े[152] फिर मारे गए या मर गए

لَيَرْزُقَنَّهُمُ اللّٰهُ رِزْقًا حَسَنًا ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ لَهُوَ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ﴿۵۸﴾

तो **अल्लाह** ज़रूर उन्हें अच्छी रोज़ी देगा[153] और बेशक **अल्लाह** की रोज़ी सब से बेहतर है

لَيُدْخِلَنَّهُمْ مُّدْخَلًا يَّرْضَوْنَهٗ ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ لَعَلِيْمٌ حَلِيْمٌ ﴿۵۹﴾ ذٰلِكَ ۚ وَ

ज़रूर उन्हें ऐसी जगह ले जाएगा जिसे वोह पसन्द करेंगे[154] और बेशक **अल्लाह** इ़ल्म और हिल्म वाला है बात येह है और

مَنْ عَاقَبَ بِمِثْلِ مَا عُوْقِبَ بِهٖ ثُمَّ بُغِيَ عَلَيْهِ لَيَنْصُرَنَّهُ اللّٰهُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ

जो बदला ले[155] जैसी तक्लीफ़ पहुंचाई गई थी फिर उस पर ज़ियादती की जाए[156] तो बेशक **अल्लाह** उस की मदद फ़रमाएगा[157] बेशक **अल्लाह**

मुनाफ़िक़ीन। **145 :** **अल्लाह** के दीन का और उस की आयात का। **146 :** या'नी कुरआन शरीफ़ **147 :** या'नी कुरआन से या दीने इस्लाम से **148 :** या मौत कि वोह भी क़ियामते सुग़रा है। **149 :** इस से बद्र का दिन मुराद है जिस में काफ़िरों के लिये कुछ कशाइश व राहत न थी। और बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा कि इस से रोज़े क़ियामत मुराद है। **150 :** या'नी क़ियामत के दिन **151 :** उन्हों ने **152 :** और उस की रिज़ा के लिये अ़ज़ीज़ो अक़ारिब को छोड़ कर वत़न से निकले और मक्कए मुकर्रमा से मदीनए त़य्यिबा की त़रफ़ हिजरत की **153 :** या'नी रिज़्क़े जन्नत जो कभी मुन्क़त़अ़ न हो। **154 :** वहां उन की हर मुराद पूरी होगी और कोई ना गवार बात पेश न आएगी। **शाने नुज़ूल :** नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से आप के बा'ज़ अस्ह़ाब ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم हमारे जो अस्ह़ाब शहीद हो गए हम जानते हैं कि बारगाहे इलाही में उन के बड़े दरजे हैं और हम जिहादों में हुज़ूर के साथ रहेंगे लेकिन अगर हम आप के साथ रहे और बे शहादत के मौत आई तो आख़िरत में हमारे लिये क्या है ? इस पर येह आयतें नाज़िल हुईं "وَالَّذِيْنَ هَاجَرُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ"। **155 :** कोई मोमिन ज़ुल्म का मुश्रिक से **156 :** ज़ालिम की त़रफ़ से उस को बे वत़न कर के **157** **शाने नुज़ूल :** येह आयत मुश्रिकीन के ह़क़ में नाज़िल हुई जो माहे मुह़र्रम की अख़ीर तारीख़ों में मुसल्मानों पर ह़म्ला आवर हुए और मुसल्मानों ने माहे मुबारक की हुरमत के ख़याल से लड़ना न चाहा मगर मुश्रिक न माने और उन्हों ने क़िताल शुरूअ़ कर दिया मुसल्मान उन के मुक़ाबिल साबित रहे **अल्लाह** तआ़ला ने उन की मदद फ़रमाई।

www.dawateislami.net

لَعَفُوٌّ غَفُوْرٌ ﴿٦٠﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ يُوْلِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَ يُوْلِجُ النَّهَارَ

मुआ़फ़ करने वाला बख़्शने वाला है येह[158] इस लिये कि अल्लाह तआ़ला रात को डालता है दिन के हिस्से में और दिन को लाता है

فِي الَّيْلِ وَ اَنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌۢ بَصِيْرٌ ﴿٦١﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ وَ اَنَّ مَا

रात के हिस्से में[159] और इस लिये कि अल्लाह सुनता देखता है येह इस लिये[160] कि अल्लाह ही ह़क़ है और उस के

يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ هُوَ الْبَاطِلُ وَ اَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيْرُ ﴿٦٢﴾ اَلَمْ تَرَ

सिवा जिसे पूजते हैं[161] वोही बाति़ल है और इस लिये कि अल्लाह ही बुलन्दी बड़ाई वाला है क्या तू ने न देखा

اَنَّ اللّٰهَ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَتُصْبِحُ الْاَرْضُ مُخْضَرَّةً اِنَّ

कि अल्लाह ने आस्मान से पानी उतारा तो सुब्ह़ को ज़मीन[162] हरियाली (हरी भरी) हो गई बेशक

اللّٰهَ لَطِيْفٌ خَبِيْرٌ ﴿٦٣﴾ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِي الْاَرْضِ وَ اِنَّ اللّٰهَ

अल्लाह पाक ख़बरदार है उसी का माल है जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में है और बेशक अल्लाह

لَهُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ﴿٦٤﴾ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ سَخَّرَ لَكُمْ مَّا فِي الْاَرْضِ ع ٨/١٥

ही बे नियाज़ सब ख़ूबियों सराहा है क्या तू ने न देखा कि अल्लाह ने तुम्हारे बस में कर दिया जो कुछ ज़मीन में है[163]

وَ الْفُلْكَ تَجْرِيْ فِي الْبَحْرِ بِاَمْرِهٖ وَ يُمْسِكُ السَّمَآءَ اَنْ تَقَعَ عَلَى

और किश्ती कि दरिया में उस के हुक्म से चलती है[164] और वोह रोके हुए है आस्मान को कि ज़मीन पर

الْاَرْضِ اِلَّا بِاِذْنِهٖ اِنَّ اللّٰهَ بِالنَّاسِ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿٦٥﴾ وَ هُوَ الَّذِيْۤ

न गिर पड़े मगर उस के हुक्म से बेशक अल्लाह आदमियों पर बड़ी मेहर (रह़मत) वाला मेह्रबान है[165] और वोही है जिस ने

اَحْيَاكُمْ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيْكُمْ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَكَفُوْرٌ ﴿٦٦﴾ لِكُلِّ

तुम्हें ज़िन्दा किया[166] फिर तुम्हें मारेगा[167] फिर तुम्हें जिलाएगा[168] बेशक आदमी बड़ा नाशुक्रा है[169] हर

158 : या'नी मज़्लूम की मदद फ़रमाना इस लिये है कि अल्लाह जो चाहे उस पर क़ादिर है और उस की क़ुदरत की निशानियां ज़ाहिर हैं। **159 :** या'नी कभी दिन को बढ़ाता रात को घटाता है और कभी रात को बढ़ाता दिन को घटाता है, उस के सिवा कोई इस पर क़ुदरत नहीं रखता, जो ऐसा क़ुदरत वाला है वोह जिस की चाहे मदद फ़रमाए और जिसे चाहे ग़ालिब करे। **160 :** या'नी और येह मदद इस लिये भी है **161 :** या'नी बुत **162 :** सब्ज़े से **163 :** जानवर वग़ैरा जिन पर तुम सुवार होते हो और जिस से तुम काम लेते हो। **164 :** तुम्हारे लिये इस के चलाने के वासिते़ हवा और पानी को मुसख़्ख़र किया। **165 :** कि उस ने उन के लिये मन्फ़अ़तों के दरवाज़े खोले और त़रह़ त़रह़ की मज़र्रतों से उन को मह़फ़ूज़ किया। **166 :** बेजान नुत़्फ़े से पैदा फ़रमा कर **167 :** तुम्हारी उ़म्रें पूरी होने पर **168 :** रोज़े बअ़्स सवाब व अ़ज़ाब के लिये। **169 :** कि बा वुजूद इतनी ने'मतों के उस की इ़बादत से मुंह फेरता है और बेजान मख़्लूक़ की परस्तिश करता है।

أُمَّةٍ جَعَلْنَا مَنْسَكًا هُمْ نَاسِكُوهُ فَلَا يُنَازِعُنَّكَ فِي الْأَمْرِ وَادْعُ إِلَىٰ

उम्मत के लिये[170] हम ने इबादत के क़ाइदे बना दिये कि वोह उन पर चले[171] तो हरगिज़ वोह तुम से इस मुआमले में झगड़ा न करें[172] और अपने रब

رَبِّكَ ۖ إِنَّكَ لَعَلَىٰ هُدًى مُسْتَقِيمٍ ﴿٦٧﴾ وَإِنْ جَادَلُوكَ فَقُلِ اللَّهُ أَعْلَمُ

की तरफ़ बुलाओ[173] बेशक तुम सीधी राह पर हो और अगर वोह[174] तुम से झगड़ें तो फ़रमा दो कि अल्लाह ख़ूब जानता है

بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿٦٨﴾ اللَّهُ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فِيمَا كُنْتُمْ فِيهِ

तुम्हारे कौतक (करतूत) अल्लाह तुम में फ़ैसला कर देगा क़ियामत के दिन जिस बात में

تَخْتَلِفُونَ ﴿٦٩﴾ أَلَمْ تَعْلَمْ أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ ۗ إِنَّ

इख़्तिलाफ़ कर रहे हो[175] क्या तू ने न जाना कि अल्लाह जानता है जो कुछ आस्मानों और ज़मीन में है बेशक

ذَٰلِكَ فِي كِتَابٍ ۚ إِنَّ ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ﴿٧٠﴾ وَيَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ

येह सब एक किताब में है[176] बेशक येह[177] अल्लाह पर आसान है[178] और अल्लाह के सिवा ऐसों को पूजते

اللَّهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهِ سُلْطَانًا وَمَا لَيْسَ لَهُمْ بِهِ عِلْمٌ ۗ وَمَا لِلظَّالِمِينَ

हैं[179] जिन की कोई सनद उस ने न उतारी और ऐसों को जिन का खुद उन्हें कुछ इल्म नहीं[180] और सितमगारों का[181]

مِنْ نَصِيرٍ ﴿٧١﴾ وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا بَيِّنَاتٍ تَعْرِفُ فِي وُجُوهِ الَّذِينَ

कोई मददगार नहीं[182] और जब उन पर हमारी रोशन आयतें पढ़ी जाएं[183] तो तुम उन के चेहरों पर बिगड़ने के आसार देखोगे

كَفَرُوا الْمُنْكَرَ ۖ يَكَادُونَ يَسْطُونَ بِالَّذِينَ يَتْلُونَ عَلَيْهِمْ آيَاتِنَا ۗ

जिन्हों ने कुफ़्र किया क़रीब है कि लिपट पड़ें उन को जो हमारी आयतें उन पर पढ़ते हैं

قُلْ أَفَأُنَبِّئُكُمْ بِشَرٍّ مِنْ ذَٰلِكُمُ ۗ النَّارُ ۖ وَعَدَهَا اللَّهُ الَّذِينَ كَفَرُوا ۗ

तुम फ़रमा दो क्या मैं तुम्हें बता दूं जो तुम्हारे इस हाल से भी[184] बदतर है वोह आग है अल्लाह ने इस का वा'दा दिया है काफ़िरों को

170 : अहले दीन व मिलल में से। **171 :** और आमिल हो। **172 :** या'नी अम्रे दीन में या ज़बीहा के अम्र में। **शाने नुज़ूल :** येह आयत बुदैल इब्ने वरक़ा और बिशर बिन सुफ़्यान और यज़ीद इब्ने ख़ुनैस के हक़ में नाज़िल हुई। इन लोगों ने अस्हाबे रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से कहा था क्या सबब है जिस जानवर को तुम खुद क़त्ल करते हो उसे तो खाते हो और जिस को अल्लाह मारता है उस को नहीं खाते ? इस पर येह आयत नाज़िल हुई। **173 :** और लोगों को उस पर ईमान लाने और उस का दीन क़बूल करने और उस की इबादत में मश्ग़ूल होने की दा'वत दो। **174 :** बा वुजूद तुम्हारे तरह देने के भी **175 :** और तुम पर हक़ीक़ते हाल ज़ाहिर हो जाएगी। **176 :** या'नी लौहे महफ़ूज़ में। **177 :** या'नी इन सब का इल्म या तमाम हवादिस का लौहे महफ़ूज़ में सब्त फ़रमाना **178 :** इस के बा'द कुफ़्फ़ार की जहालतों का बयान फ़रमाया जाता है कि वोह ऐसों की इबादत करते हैं जो इबादत के मुस्तहिक़ नहीं। **179 :** या'नी बुतों को **180 :** या'नी उन के पास अपने इस फ़े'ल की न कोई दलीले अक़्ली है न नक़्ली, महज़ जहल व नादानी से गुमराही में पड़े हुए हैं और जो किसी तरह पूजे जाने के मुस्तहिक़ नहीं उन को पूजते हैं, येह शदीद ज़ुल्म है। **181 :** या'नी मुश्रिकीन का **182 :** जो उन्हें अज़ाबे इलाही से बचा सके। **183 :** और क़ुरआने करीम उन्हें सुनाया

www.dawateislami.net

وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿٧٢﴾ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ ضُرِبَ مَثَلٌ فَاسْتَمِعُوْا لَهٗ ؕ اِنَّ

और क्या ही बुरी पलटने की जगह ऐ लोगो ! एक कहावत फ़रमाई जाती है इसे कान लगा कर सुनो[185] वोह

الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ لَنْ يَّخْلُقُوْا ذُبَابًا وَّلَوِ اجْتَمَعُوْا لَهٗ ؕ

जिन्हें अल्लाह के सिवा तुम पूजते हो[186] एक मख्खी न बना सकेंगे अगर्चे सब इस पर इकठ्ठे हो जाएं[187]

وَاِنْ يَّسْلُبْهُمُ الذُّبَابُ شَيْـًٔا لَّا يَسْتَنْقِذُوْهُ مِنْهُ ؕ ضَعُفَ الطَّالِبُ

और अगर मख्खी उन से कुछ छीन कर ले जाए[188] तो उस से छुड़ा न सकें[189] कितना कमज़ोर चाहने वाला

وَالْمَطْلُوْبُ ﴿٧٣﴾ مَا قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَقَوِيٌّ عَزِيْزٌ ﴿٧٤﴾

और वोह जिस को चाहा[190] अल्लाह की क़द्र न जानी जैसी चाहिये थी[191] बेशक अल्लाह कुव्वत वाला ग़ालिब है

اَللّٰهُ يَصْطَفِيْ مِنَ الْمَلٰٓئِكَةِ رُسُلًا وَّمِنَ النَّاسِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌۢ

अल्लाह चुन लेता है फ़िरिश्तों में से रसूल[192] और आदमियों में से[193] बेशक अल्लाह सुनता देखता है

بَصِيْرٌ ﴿٧٥﴾ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ ؕ وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ

जानता है जो उन के आगे है और जो उन के पीछे है[194] और सब कामों की रुजूअ़ अल्लाह

الْاُمُوْرُ ﴿٧٦﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا ارْكَعُوْا وَاسْجُدُوْا وَاعْبُدُوْا رَبَّكُمْ

की त़रफ़ है ऐ ईमान वालो ! रुकूअ़ और सज्दा करो[195] और अपने रब की बन्दगी करो[196]

وَافْعَلُوا الْخَيْرَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿٧٧﴾ السجدة وَجَاهِدُوْا فِى اللّٰهِ حَقَّ جِهَادِهٖ ؕ

और भले काम करो[197] इस उम्मीद पर कि तुम्हें छुटकारा हो और अल्लाह की राह में जिहाद करो जैसा ह़क़ है जिहाद करने का[198]

जाए जिस में बयाने अह़काम और तफ़्सीले ह़लाल व ह़राम है। **184 :** या'नी तुम्हारे इस ग़ैज़ व ना गवारी से भी जो कुरआने पाक सुन कर तुम में पैदा होती है **185 :** और इस में ख़ूब ग़ौर करो, वोह कहावत येह है कि तुम्हारे बुत **186 :** उन की आजिज़ी और बे क़ुदरती का येह ह़ाल है कि वोह निहायत छोटी सी चीज़ **187 :** तो आ़क़िल को कब शायान है कि ऐसे को मा'बूद ठहराए, ऐसे को पूजना और इलाह क़रार देना कितना इन्तिहा दरजे का जहल है। **188 :** वोह शह्द व ज़ा'फ़रान वग़ैरा जो मुश्रिकीन बुतों के मुंह और सरों पर मलते हैं जिस पर मख्खियां भिनकती हैं। **189 :** ऐसे को ख़ुदा बनाना और मा'बूद ठहराना कितना अ़जीब और अ़क़्ल से दूर है। **190 :** चाहने वाले से बुत परस्त और चाहे हुए से बुत मुराद है या चाहने वाले से मख्खी मुराद है जो बुत पर से शह्द व ज़ा'फ़रान की त़ालिब है और मत़लूब से बुत। और बा'ज़ ने कहा कि त़ालिब से बुत मुराद है और मत़लूब से मख्खी। **191 :** और उस की अ़ज़मत न पहचानी जिन्हों ने ऐसों को ख़ुदा का शरीक किया जो मख्खी से भी कमज़ोर हैं, मा'बूद वोही है जो क़ुदरते कामिला रखे। **192 :** मिस्ल जिब्रील व मीकाईल वग़ैरा के **193 :** मिस्ल ह़ज़रते इब्राहीम व ह़ज़रते मूसा व ह़ज़रते ईसा व ह़ज़रते सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ के। **शाने नुज़ूल :** येह आयत उन कुफ़्फ़ार के रद में नाज़िल हुई जिन्हों ने बशर के रसूल होने का इन्कार किया था और कहा था कि बशर कैसे रसूल हो सकता है ? इस पर अल्लाह तआ़ला ने येह आयत नाज़िल फ़रमाई और इर्शाद फ़रमाया कि अल्लाह मालिक है जिसे चाहे अपना रसूल बनाए वोह इन्सानों में से भी रसूल बनाता है और मलाएका में से भी जिन्हें चाहे। **194 :** या'नी उमूरे दुन्या को भी और उमूरे आख़िरत को भी या उन के गुज़रे हुए आ'माल को भी और आयिन्दा के अह़वाल को भी। **195 :** अपनी नमाज़ों में। इस्लाम के अव्वल अ़ह्द में नमाज़ बिग़ैर रुकूअ़ व सुजूद के थी फिर नमाज़ में रुकूअ़ व सुजूद का हुक्म फ़रमाया गया। **196 :** या'नी रुकूअ़ व सुजूद

السجدة عند الامام الشافعي عليه رحمة الله الكافي

www.dawateislami.net

هُوَ اجْتَبٰىكُمْ وَمَا جَعَلَ عَلَيْكُمْ فِي الدِّيْنِ مِنْ حَرَجٍ ؕ مِلَّةَ اَبِيْكُمْ

उस ने तुम्हें पसन्द किया[199] और तुम पर दीन में कुछ तंगी न रखी[200] तुम्हारे बाप

اِبْرٰهِيْمَ ؕ هُوَ سَمّٰىكُمُ الْمُسْلِمِيْنَ ۙ۬ مِنْ قَبْلُ وَفِيْ هٰذَا لِيَكُوْنَ

इब्राहीम का दीन[201] अल्लाह ने तुम्हारा नाम मुसल्मान रखा है अगली किताबों में और इस क़ुरआन में ताकि रसूल

الرَّسُوْلُ شَهِيْدًا عَلَيْكُمْ وَتَكُوْنُوْا شُهَدَآءَ عَلَى النَّاسِ ۖۚ فَاَقِيْمُوا

तुम्हारा निगहबान व गवाह हो[202] और तुम और लोगों पर गवाही दो[203] तो नमाज़

الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاعْتَصِمُوْا بِاللّٰهِ ؕ هُوَ مَوْلٰىكُمْ ۚ فَنِعْمَ الْمَوْلٰى

बरपा रखो[204] और ज़कात दो और अल्लाह की रस्सी मज़बूत थाम लो[205] वोह तुम्हारा मौला है तो क्या ही अच्छा मौला

وَنِعْمَ النَّصِيْرُ ﴿۷۸﴾ ع

और क्या ही अच्छा मददगार

ख़ास अल्लाह के लिये हों और इबादत में इख़्लास इख़्तियार करो। **197 :** सिलए रेहमी मकारिमुल अख़्लाक़ वग़ैरा नेकियां। **198 :** या'नी निय्यते सादिक़ा ख़ालिसा के साथ ए'लाए दीन के लिये **199 :** अपने दीन व इबादत के लिये। **200 :** बल्कि ज़रूरत के मौक़ओं पर तुम्हारे लिये सहूलत कर दी जैसे कि सफ़र में नमाज़ का क़स्र और रोज़े के इफ़्तार की इजाज़त और पानी न पाने या पानी के ज़रर करने की हालत में गुस्ल और वुज़ू की जगह तयम्मुम, तो तुम दीन की पैरवी करो। **201 :** जो दीने मुहम्मदी में दाख़िल है। **202 :** रोज़े क़ियामत कि तुम्हारे पास ख़ुदा का पयाम पहुंचा दिया। **203 :** कि उन्हें उन रसूलों ने अह़कामे ख़ुदावन्दी पहुंचा दिये, अल्लाह तआ़ला ने तुम्हें येह इ़ज़्ज़तो करामत अ़ता फ़रमाई। **204 :** इस पर मुदावमत करो **205 :** और उस के दीन पर क़ाइम रहो।

www.dawateislami.net